मई 2018

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 जो बोओगे, सो काटोगे

विशेष स्तम्भ

8 समसामयिक सामान्य ज्ञान
13 आर्थिक परिदृश्य
17 राष्ट्रीय परिदृश्य
20 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
28 क्रीड़ा जगत्
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
39 युवा प्रतिभाएं
42 सामान्य जागरूकता—आगामी रेलवे परीक्षाओं के लिए विशेष
45 सारभूत तत्व कोष
49 सिविल सेवा के साक्षात्कार की प्रारम्भिक तैयारी—एक आदर्श साक्षात्कार

लेख

51 ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक लेख—पुराणों में वर्णित प्राचीन भारतीय नगर
53 कृषि लेख—खाद्य सुरक्षा के आड़े आते धनी देशों के हित
55 वैधानिक लेख—मुस्लिमों की आधी आबादी को आजादी
56 पर्यावरणीय लेख—जैविक विविधता से सम्बन्धित अधिनियम
57 कॅरियर लेख—सहायक अध्यापक (प्रशिक्षित स्नातक श्रेणी) उत्तर प्रदेश एलटी ग्रेड टीचर भर्ती परीक्षा—2018

हल प्रश्न-पत्र

59 मध्य प्रदेश पुलिस सूबेदार एवं सब-इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा, 2017
72 मध्य प्रदेश एकीकृत बाल विकास सेवा भर्ती परीक्षा, 2017 (महिला पर्यवेक्षक एवं वर्यवेक्षक महिला आँगनवाड़ी कार्यकर्ता)
82 राजस्थान अध्यापक (ग्रेड-II) परीक्षा, 2017
90 छत्तीसगढ़ राजस्व एवं आपदा प्रबन्धन विभाग राजस्व निरीक्षक परीक्षा, 2017
100 आगामी उत्तर प्रदेश पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
109 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड लोको पायलट/तकनीशियन कम्प्यूटर आधारित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
114 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड ग्रुप 'डी' कम्प्यूटर आधारित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
122 आगामी आर.आर.बी. परीक्षा के लिए विशेष हल प्रश्न-फिटर शॉप थ्योरी

विविध/सामान्य

125 सामान्य जानकारी—खेती एवं दुग्ध उत्पादन में बकरीपालन की महत्ता जानिए
127 ज्ञान वृद्धि कीजिए
128 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

जो बोओगे, सो काटोगे

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

As you sow, so shall you reap.

यह एक शाश्वत सत्य है कि इंसान जैसा करेगा वैसा भरेगा, जैसा बोएगा वैसा काटेगा. चना बोकर गेहूँ नहीं काटा जा सकता. हर एक को अपने विचारों व भावों के अनुरूप ही फल मिला करता है. यह किसी एक धर्म का कथन नहीं है. न ही किसी एक महापुरुष या किसी एक समय का सत्य है. यह एक प्राकृत तथ्य है, जिसकी उपेक्षा त्रिकाल में असम्भव है. इस दुनिया का हर प्राणी अपने-अपने कर्मों का फल पाता है. वह जैसा भाव प्रसारित करता है और जैसी क्रिया करता है वैसा ही परिणाम (Result) उसे मिलता जाता है. इस कर्म फल प्रक्रिया से आज दिन तक कोई भी नहीं बच पाया है इसीलिए सभी सन्त-महात्मा, मनीषीजन हर युग के मानव को सही कर्म करने की प्रेरणा देते रहते हैं. यहाँ प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि 'जब सबको मालूम है कि अपने कर्मों का फल प्राणी मात्र को भोगना ही पड़ता है, फिर क्या कारण है कि लोग अशुभ कर्म करते जाते हैं ?' वे अशुभ कर्म करते ही क्यों हैं ? विषयुक्त फल की चाहना कोई भी तो नहीं करता, फिर भी विषैले बीजों को क्यों बोया जाता है ? इसका उत्तर है—जीव मात्र में रहा हुआ अज्ञान व आवेश का प्रभाव.

अज्ञान यानि तथ्यपूर्ण ज्ञान का अभाव. जब तक सृष्टि चक्र के प्रवर्तन का सम्यक् ज्ञान हमें नहीं होता तब तक ही हम गलत कर्म करते जाते हैं, अगर यह बोध सब में आ जाए कि हम ही अपने विचार, वचन व कर्मों से अपने जीवन की हर शुभ-अशुभ घटना का निर्माण करते हैं, तो हम स्वयं को रूपान्तरित कर अपने जीवन के प्रत्येक पृष्ठ को बदल भी सकते हैं. इसके लिए हम में से हर एक इंसान को इस जगत् की गति के तथ्यात्मक विज्ञान को जरूर जानना चाहिए. जाने बिना सही जिन्दगी को जीया नहीं जा सकता है, जो लोग जानकार हैं, उन्हें अपने अनुभूत सत्यों को आगे बाँटने में भी कंजूसी नहीं करनी है. अन्यथा हम भी उन सभी के प्रति कहीं-न-कहीं जिम्मेदार होंगे, जो राह पर गति के नियमों को जाने बिना चल रहे हैं और स्वयं के लिए व अन्य लोगों के लिए परेशानी का कारण बन रहे हैं. हर एक समझदार की जिम्मेदारी कहीं ज्यादा है, उन नादान लोगों के प्रति, जो ज्ञानी नहीं होने के कारण से भूलें कर रहे हैं, अगर हमें भी कोई नहीं समझाता, तो शायद हम भी भूलें कर रहे होते, फिर भला हमें बोध हुआ है, तो हम उसे बाँटने में कृपण क्यों बनें ?